UGC Approved, Journal No. 48416 (IJCR), Impact Factor 6.0 ISSN : 2393-8358

Interdisciplinary Journal of Contemporary Research

An International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Vol. 11, No. 1 January, 2024

PEER REVIEWED JOURNAL

EDITOR

Dr. H.L. Sharma
Associate Professor
Shimla, Himachal Pradesh

Dr. Hans Prabhakar Ravidas
Assistant Professor
Department of Performing Arts,
National Sanskrit University, Tirupati

Dr. Anil Kumar
Assistant Professor, Department of History
Rajdhani College, University of Delhi

Published by
VPO Nandpur, Tehsil-Jubbal, District-Shimla, Himachal Pradesh
email : ijcrournal971@gmail.com, Website : ijcrjournals.com

▸	उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की कोचिंग के प्रति अभिरूचि का अध्ययन **डॉ0 शिवम सक्सेना, डॉ0 अमर बहादुर एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	93-96
▸	विद्यालयी बच्चों पर प्राणायाम का सकारात्मक प्रभाव **अमृता कुमारी एवं आलोक कुमार पाण्डेय**	98-102
▸	प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की दंड के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन **मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, विनोद कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	103-106
▸	माध्यमिक स्तर के राजकीय एवं निजी विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति के स्तर का अध्ययन **गजानंद सैन एवं डॉ0 मोहनलाल मेघवाल**	107-109
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना का अध्ययन **महेश चंद जाटव, अमन कुमार एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	110-112
▸	आधुनिक भारत में प्रचलित पश्चिमी उपनिवेशवादी 'कास्ट' की संकल्पना का अवलोकन और समीक्षा **डॉ0 ओंकार चतुर्वेदी**	113-116
▸	उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के संस्थाप्रधानों की कार्यरत जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन **जयसिंह जाटव, ज्योति कश्यप एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	117-120
▸	करौली जिले के सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कक्षा शिक्षण के प्रति जवाबदेही का तुलनात्मक अध्ययन **श्री जगदीश प्रसाद शर्मा, श्री छैल बिहारी शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	121-125
▸	माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में नए सीसीई पैटर्न के अनुसार पढ़ाई जाने वाले पाठ्यक्रम का विद्यार्थियों अध्यापकों एवं अभिभावकों के मध्य पाठ्यक्रम संतुष्टीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन **श्रीमती मुकेशी मीना, श्री नितेंद्र कुमार शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	126-128
▸	स्वामी विवेकानन्द के दार्शनिक एवं शैक्षिक चिन्तन का अध्ययन **श्री मनेन्द्र कुमार लहकोडिया, श्री जगदीश प्रसाद शर्मा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	129-132
▸	सामान्य वर्ग व अन्य पिछड़ा वर्ग के बी0एड0 में अध्यनरत प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तित्व एवं समायोजन का अध्ययन **विनोद कुमार शर्मा, मो0 आरिफ एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	133-136
▸	स्नातक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव **मोहम्मद रफी एवं डॉ0 माहेजबी**	137-139
▸	सामान्य एवं अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की नारी की सामाजिक स्वतंत्रता एवं नारी समानता के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन **विष्णु कुमार शर्मा, डॉ0 विवेक मिश्रा एवं डॉ0 मनोज कुमार शर्मा**	140-142
▸	The state of Women's Education in India impacting their Work Participation Rates with Special Reference to the Handloom Industry of Pilkhuwa **Anamika Pandey**	143-152
▸	Exploring the Theoretical Foundations of Animal-Assisted Therapy in Alleviating Loneliness among the Geriatric Population **Devyani Awasthi**	153-157

UGC Approved Journal No. 48416 (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal)
Interdisciplinary Journal of Contemporary Research, Vol. 11, No. 1, January, 2024

Impact Factor: 6.0
ISSN: 2393-8358

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना का अध्ययन

महेश चंद जाटव
सहायक आचार्य, वीणा मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली
अमन कुमार
सहायक आचार्य, वीणा मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली
डॉ0 मनोज कुमार शर्मा
प्राचार्य, वीणा मेमोरियल कॉलेज ऑफ एजुकेशन, पदेवा, करौली

सारांश

अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष में संयुक्त राष्ट्र संघ ने बाल अधिकार स्नेह प्यार और समझपूर्ण आहार और मेडीकल मुक्त शिक्षा, खेल और सृजन के पूर्ण अवसर नाम और राष्ट्रीयता विकलांगों की विशेष देखरेख आपदा के समय प्राथमिक तौर पर सुविधा मुहैया करना समझ का उपयोगी सदस्य मानना, व्यक्तिगत योग्यताओं को विकसित करना उन्हें आपसी भाईचारे तथा शांति की भावना से घोषित करना, किसी भी प्रकार का भेदभाव रंग, लिंग, धर्म, राष्ट्रीयता मूल के बिना उन्हें अपने अधिकारों का आनंद लेने की उद्घोषणा को परिभाषित किया।

शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया, शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया है जनसंख्या से आदर्श न्यायदर्श यादृच्छिक न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में 95 विद्यार्थियों को लिया गया न्यादर्श को पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए शहरी ग्रामीण छात्र–छात्राएं निजी, सरकारी विद्यालयों को रखा गया शोध उपकरण के रूप में सिन्हा तथा सिंह (1989) द्वारा निर्मित स्केल फार असेसिगसोशल डिसएडवांटेज का प्रयोग किया गया है जिसके अंतर्गत कुल 60 मद है जिसमें सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के मद है आंकड़ों को सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मध्यमान मानक विचलन और क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया। सामाजिक वंचना की दृष्टि से कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र तथा छात्राएं समान थे। सामाजिक वंचना की दृष्टि से विज्ञान तथा कला वर्ग के विद्यार्थी समान थे।

शोध समस्या की पृष्ठभूमि

अंतर्राष्ट्रीय बाल वर्ष में संयुक्त राष्ट्र संघ ने बाल अधिकार स्नेह प्यार और समझ आहार और मेडीकल मुक्त शिक्षा, खेल और सृजन के पूर्ण अवसर नाम और राष्ट्रीयता विकलांगों की विशेष देखरेख आपदा के समय प्राथमिक तौर पर सुविधा मुहैया कराना समझ का उपयोगी सदस्य मानना व्यक्तिगत योग्यता को विकसित करना उन्हें आपसी भाईचारे तथा शांति की भावना से पोषित करना किसी भी प्रकार का भेदभाव रंग, लिंग, धर्म, राष्ट्रीयता मूल के बिना उन्हें अपने अधिकारों का आनंद लेने की उद्घोषणा को परिभाषित किया।

भारतीय समाज में वंचित तथा अलाभांवित बच्चों की शिक्षा की समस्या एक गंभीर समस्या है भारत जैसे देश में जहां 50 प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे है प्रश्न यह है कि ऐसे बच्चे अपने जीने के तरीके से किस प्रकार मुक्ति पाकर अपने लिए उपयुक्त शिक्षा और अवसरों का लाभ उठाकर राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल हो यदि इस प्रश्न पर राजनीतिक दार्शनिक और मानवीय दृष्टिकोण से विचार किया जाए तो ऐसे बच्चों को जैसा कि कहा जाता है कि "सबको समान शिक्षा तथा समान अवसर" बढ़ती मांग तथा सामाजिक विस्तार इनके लिए भी आवश्यक है।

मनोवैज्ञानिकों ने बहुत सी धारणाये उपकरणों से संबंधित व्यक्त की है जो सामाजिक पिछड़ेपन की धारणा को दर्शाते हैं और सामाजिक पिछडापन ज्यादातर उन आर्थिक समूह में पाया जाता है पहली बार वर्नस्टीन ने सामाजिक पिछडेपन के कारण को व्यक्त किया और अपंग बच्चों को अपनी पूरी समर्थ का प्रयोग करने में सामर्थ है।

सामाजिक आर्थिक स्तर संपूर्ण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रखता है सामाजिक लाभ बहुत से उन कारणों से सहयोग करता है जो बुद्धि और विकास को उपलब्ध कराते हैं जबकि सामाजिक पिछडापन विपरीत दिशा में असर डालता है।

भारत में वर्तमान में अनुसूचित जातियों के लोगों की संख्या जिन्हें अस्पृश्य माना जा रहा है 15 करोड़ है इस देश में इन करोड़ों व्यक्तियों को अस्पृश्यता के नाम पर मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया है और निम्नतम स्तर का जीवन विताने के लिए वाध्य किया गया है। इन लोगों पर सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक

निर्योग्यताएं लाद दी गई जिसकी वजह से इन्हे जीवन की सब प्रकार की सुख सुविधाओं से वंचित रहना पड़ा।

अस्पृश्यता से संबंधित कई निर्योग्यताएं हैं

- सामाजिक सुविधाओं से वंचित वर्ग की निर्योग्यताएं

धार्मिक निर्योग्यताएं

- मंदिर प्रवेश व पवित्र स्थानो के उपयोग पर प्रतिबंध
- धार्मिक सुख सुविधाओ से वंचित
- धार्मिक संस्कारों के संपादन पर प्रतिबंध

सामाजिक निर्योग्यताएं

- सामाजिक संपर्क पर रोक
- सार्वजनिक वस्तुओं के उपयोग पर प्रतिबंध
- शिक्षा और मनोरंजन संबंधी सुविधा से वंचित
- अस्पृश्यों के भीतर भी संस्तरण
- अस्पृश्य एक पृथक समाज के रूप में

आर्थिक निर्योग्यताएं

- व्यावसायिक निर्योग्यता
- संपत्ति संबंधी निर्योग्यता
- भरपेट भोजन की सुविधा भी नहीं (आर्थिक शोषण)
- राजनीतिक निर्योग्यताएं

अन्य निर्योग्यताएं

- सामाजिक एकता में बाधक
- धर्म परिवर्तन
- राजनीतिक फूट
- अंतर्जातीय तनाव के लिए उत्तरदाई
- आर्थिक असमानता
- अशिक्षा एवं दरिद्रता
- निम्न स्वास्थ्य स्तर

आज भी दलितों की करीब 50 फ़ीसदी आबादी के पास भी भूमि नहीं है मात्र 25 प्रतिशत दलित खेती करते हैं यह सरकारी आंकड़ा है जबकि 86 प्रतिशत दलित आबादी भूमिहीन है समाज के इतने बड़े वर्ग की उपेक्षा करके उन्हें मानवोचित अधिकारों से वंचित रखकर दीन हीन और दासों के समान जीवन व्यतीत करने के लिए वाध्य करके सामाजिक प्रगति और राष्ट्र को समृद्ध एवं वैभवशाली बनाने की कल्पना नहीं की जा सकती इसी बात को ध्यान में रखकर स्थिति में सुधार लाने हेतु समय–समय पर अनेक आंदोलन भी हुए परंतु उन्हें धर्म के नाम पर दबाने की कोशिश की गई पिछले कुछ वर्षों से उनकी स्थिति को सुधारने और उनके कल्याण के लिए अनेक प्रयास चल रहे हैं किंतु अभी बहुत कुछ करना शेष है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की समस्या

"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक वंचना का अध्ययन।"

शोध अध्ययन का उद्देश्य

विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्रों और विज्ञान तथा कला वर्ग की छात्राओं की सामाजिक वंचना की तुलना करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

- विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्रों और विज्ञान तथा कला वर्ग की छात्राओं की सामाजिक वंचना में सार्थक अंतर नहीं है।

शोध समस्या के अध्ययन का प्रारूप

शोध कार्य हेतु आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया शोध कार्य में जनसंख्या के रूप में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया है जनसंख्या में से न्यादर्शन विधि द्वारा न्यादर्श के रूप में 95 विद्यार्थियों को लिया गया है। न्यादर्श से पूर्ण प्रतिनिधित्व बनाने के लिए शहरी ग्रामीण छात्र–छात्राएं निजी विद्यालयों को रखा गया शोध उपकरण के रूप में सिन्हा तथा सिंह (1989) द्वारा निर्मित स्केल फार

असेसिग सोशल डिसएडवांटेज का प्रयोग किया गया जिसके अंतर्गत कुल 60 मद है जिनमें सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के मद है आंकड़ों को सांख्यिकी विश्लेषण हेतु मध्यमान मानक विचलन और क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया।

आंकड़ों का वर्गीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या

विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्रों और छात्राओं की सामाजिक वंचना से संबंधित आंकडे प्रदर्शित करने वाली सारणी

विद्यार्थी वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता स्तर
विज्ञान वर्ग के छात्र एवं छात्राऐं	50	23.08	5.73	1.16	सार्थक नहीं
कला वर्ग के छात्र एवं छात्राए	45	21.48	5.82		

df=94

0.05 सार्थकता स्तर पर टी–मान=1.98

0.01 सार्थकता स्तर पर टी–मान=2.63

तालिका का अवलोकन करके यह ज्ञात होता है कि विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्रों और छात्राओं में सामाजिक वंचना की दृष्टि से अंतर नहीं है क्योंकि क्रांतिक अनुपात किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है अतः यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक वंचना की दृष्टि से विज्ञान तथा कला वर्ग के छात्र और छात्राएं समान समान पाई गई।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष एवं सुझाव

- सामाजिक वंचना की दृष्टि से कला एवं विज्ञान वर्ग के छात्र समान पाये गये।
- सामाजिक वंचना की दृष्टि से विज्ञान तथा कला वर्ग की छात्राऐं समान पायी गयी।

सुझाव

- इस शोध कार्य में लघु न्यादर्श लिया गया इस विषय पंर बडा न्यादर्श लेकर अधिक विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त किये जा सकते हैं।
- इस विषय पर प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं पर भी अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. राय, पारसनाथ, अनुसंधान परिचय, अग्रवाल लक्ष्मी नारायण, आगरा (1998)
2. राष्ट्रीय सहारा राष्ट्रीय समस्याएं और मुद्दों पर केंद्रित शनिवाररीय परिशिष्ट, लखनऊ (2001)
3. साहब सिंह 2000, गाइडेंस नीड्स ऑफ डेस्टीट्यूट चिल्ड्रन नेशनल साइकोलॉजी कॉरपोरेशन, आगरा सर्वे (सामाजिक वंचना)